प्रसार बुलेटिन सं०- V/H/IB/278/2020

# फूलगोभी की उन्नत खेती कैसे करें

# जानिए किस्में देखभाल और पैदावार

**सुश्री स्वप्निल भारती**

विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान)

**डॉ० नरेन्द्र कुमार**

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

**संजीव कुमार**

कार्यक्रम सहायक

**कृषि विज्ञान केन्द्र**

हरिहरपुर, हाजीपुर (वैशाली)

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर- 848125 (बिहार)

# फूलगोभी की वैज्ञानिक खेती

फूलगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है जो क्रूसिफेरस परिवार से संबंधित है यह मुख्यतः बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, आसाम एवं हरियाणा में उगाया जाता है। फूलगोभी की खेती के लिए ठंडे एवं आद्र जलवायु की आवश्यकता होती है। यदि दिन अपेक्षाकृत छोटे हों तो फूल की बढ़ोतरी अधिक होती है। फूल तैयार होने समय तापमान अधिक होने से फूल पत्तेदार एवं पीले रंग के हो जाते हैं। अगेती किस्मों के लिए अधिक तापमान और बड़े दिनों की आवश्यकता होती है।

**खेती के लिए भूमि की तैयारी :-** गोभी के खेत के लिए पी0एच0 मान्य 5.5 - 7 उपयुक्त मानी गयी है। अगेती फसल के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी तथा पछेती के लिए दोमट या चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है। साधारणतयाः फूलगोभी की खेती विभिन्न प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। जिस भूमि में पर्याप्त मात्र में जैविक खाद उपलब्ध हो वह भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

**खेत की तैयारी :-** पहले खेत को पलवा करा कर जब भूमि जुताई योग्य हो जाए तब उसकी दो से तीन बार मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करा देनी चाहिए तथा इसके बाद दो से तीन बार कल्टीवेटर चलाकर पाटा लगाना अनिवार्य है।

## फूलगोभी के उन्नत किस्में

| अगेती (तापमान 20-27 °C) | मध्यम (तापमान 12-26 °C) | पछेती (तापमान 10-16 °C) |
|---|---|---|
| पूसा दिपाली | पूसा हाईब्रिड - 2 | पूसा स्नोबाउल -1 |
| पूसा कार्तिक | पंत शुभ्रा | पूसा स्नोबाउल -2 |
| पूसा कार्तिक संकर | पूसा शरद | पूसा स्नोबाउल -3 |
| पूसा अरली सिंथैटिक | पंतगोभी - 4 | |
| पूसा मेघना | पूसा हीम ज्योति | |
| काशी कुमारी | | |

| किस्मे | बुआई का समय | रोपाई का समय | बीज दर (ग्रा0/हे0) | पौध एवं पंक्ति की दूरी (सेमी0) |
|---|---|---|---|---|
| अगेती | मई-जून | जून-जुलाई | 500-600 | 45 X 45 |
| मध्यकालीन | जुलाई-अगस्त | अगस्त-सितम्बर | 350-400 | 50 X 50 |
| पछेती | अक्टूबर-नम्बर | नवम्बर-दिसम्बर | 350-400 | 60 X 60 |

**नर्सरी की स्थापना :–** गोभी की बीज बारीक होते है अत: इन्हें भलीभांति तैयार की गयी पौधशाला में बोया जाता है ताकि समय से अच्छे पौधे तैयार हो सके। पौधशाला में तीन मीटर लम्बे, एक मीटर चौड़ी तथा 15 सेमी0 ऊँची क्यारियाँ बनानी चाहिए तथा 2 क्यारियों के बीच 30 सेमी0 की नाली होनी आवश्यक है। क्यारियाँ बनाने से पूर्व उनमें पर्याप्त मात्रा में गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालकर अच्छी तरह मिट्टी में मिला देनी चाहिए तथा बीज को बोने से पूर्व उपचारित कर लेना चाहिए। जब पौधा निकल आये तब क्यारियों के मध्य बनी नालियों में सिंचाई करे तथा तेज धूप और अधिक वर्षा से पौधों को बचाने के लिए उस पर छावनी का प्रबंध करे। पौधे 4-5 सप्ताह में तैयार हो जाते हैं।

**बीज उपचारः–** बीज लगाने से पूर्व गर्म पानी (30 मिनट के लिए 50°C) या स्ट्रैप्टोसाइक्लिन 0.01 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर दो घंटे के लिए बीजों को इस घोल में भिंगो कर रखें। उपचार के बाद बीजों को छांव में सूखाकर उन्हें बोना चाहिए। रबी मौसम में काली फंगस के प्रकोप से बचाने हेतु मरकरी क्लोराइड (1ग्राम/लीटर) पानी में मिलाकर 30 मिनट के लिए बीजों को इस घोल में भिंगोकर रखे और फिर छांव में सुखाए तथा रतीली मिट्टी में ये फसल उगाने से तना गलन खतरे से रोकथाम हेतु कार्बनडाजिन 50 प्रतिशत WP 3 ग्राम / किलोग्राम बीज का उपचार करें।

**खाद एवं उर्वरक :–** अधिक उपज के लिए पर्याप्त मात्र में खाद डालने की आवश्यकता होती है। उसके लिए 20-25 टन प्रति हे0 सड़ी हुई गोबर की खाद एवं 120: 60-80 : 40-60 किलोग्राम/हे0 नाइट्रोजन:फास्फोरस: पोटास का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त बोरेक्स 10-15 किलोग्राम/हे0 एवं अमोनियम मोलीब्डेट 1-2 किलोग्राम/हे0 इस्तेमाल करना चाहिए।

**सिंचाई :–** रोपाई के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए। अगेती फसल में एक सप्ताह के अन्दर एवं देर वाली फसल में 10-15 दिनों के अंतराल में सिंचाई करनी चाहिए।

**खरपतवार नियंत्राण :–** फूलगोभी की फसल के साथ उगे खरपतवारों की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसर निराई-गुराई करते रहने चाहिए।

## कीट नियंत्रणः-

**(1.) कटुबा इल्ली :-** यह कीट गोभी के छोटे पौधों को रात में नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे रोकथाम के लिए खेत के चारों ओर 20-25 सेमी0 गहरी चौड़ी नाली खोद देनी चाहिए ताकि सूंडिया इसमें गिरकर नष्ट हो जाए।

**(2.) माहूः-** मौलाथियान 5 प्रतिशत या कार्बेरिल 10 प्रतिशत का 20-25 किलोग्राम/हे0 की दर से छिड़काव करें।

**(3.) गोभी की तितलीः-** इससे बचाव के लिए प्रतिरोधी किस्में लगानी चाहिए तथा मैलाथियान (50 ईसी) को 1.5 मिली0 प्रति लीटर की दर से पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

## प्रमुख रोग :-

**(1.) आद्रगलन रोग :-** बुआई से पूर्व बीजों को 3 ग्राम कैप्टन या बावस्टिन से उपचारित कर लेनी चाहिए तथा नर्सरी की मृदा को भी उपचारित कर के ही बीज बोना चाहिए।

**(2.) भूरी गलन :-** रोपाई से पूर्व खेत में 10-15 किलोग्राम बोराक्स प्रति हे0 की दर से छिड़काव कर लेनी चाहिए।

**(3.) तना सड़नः-** बावस्टिन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

**(4.) काला धब्बाः-** डायथेन एम-45 के छिड़काव 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से 15 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए।

**कटाई :-** जब फूल पूर्ण रूप से विकसित हो जाए तब फूलगोभी की कटाई करनी चाहिए। जाति के अनुसार रोपाई के बाद अगेती 60-70दिन, मध्यम 90-100 दिन तथा पछेती किस्म की कटाई 110-180 दिनों में करनी चाहिए।

| किस्म | उपज क्वि0/हे0 |
|---|---|
| अगेती | 100 - 150 |
| मध्यकालीन एवं पछेती | 200 - 250 |

**भंडारण :-** फूलों में पत्तियां लगे रहने पर 85-90 प्रतिशत आर्द्रता के साथ 14.22 $^{0}$C तापमान पर उन्हें एक महीने तक रखा जा सकता है।